

अनिल कुमार

इतिहास विभाग, आर०बी०जी०आर०

कॉलेज, महाराजगंज (सिवान)

लोह युगीन संस्कृतियों (चित्रित घुसर पात्र एवं उत्तरी कुण्ड-
-मार्जित पात्र संस्कृतियों के संदर्भ में)

S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27
28 29 30 31

SEPTEMBER

WEDNESDAY

248-117

WEEK-36

(Iron age cultures with special reference
to painted grey ware and Northern black
polished ware cultures)

Iron Age → मानव सभ्यता की बहुमुखी-
प्रगति में लोहे की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है।
आधुनिक काल में ही नहीं वरन् प्राचीन काल में
भी अनेक साम्राज्यों की शक्ति का खौब लोह तकनीक
के ज्ञान तथा लोहे के उपकरणों के व्यापार पर एका-
धिकार को माना जाता है। कांस्य युगीन सभ्यता के
पश्चात् लोह युग का आरंभ होता है। इसका सबसे
बड़ा लाभ यह हुआ कि अब नदी-धारियों
से दूर भी बस्तियों की स्थापना होने लगी। कांस्य युगीन
शहरी सभ्यता जो कुछ सौ वर्षों में समाप्त हो गयी
वहाँ लोह युगीन शहरी सभ्यता का निरंतर और क्रमिक
विकास होता रहा। साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का विकास
हुआ जिससे भारतीय समाज एवं धर्म भी अप्रभुता
नहीं रहा।

लोहे के शोषण का इतिहास आज भी
विवादग्रस्त है। लेकिन सर्वमान्य मान्यता यह है कि
लोहे को खान से निकालने तथा धातु शोषण प्रक्रिया
का सर्वप्रथम प्रचलन टर्की के क्षेत्र में हुआ था।
हिन्दी साम्राज्य के विघटन के पश्चात् इसका
प्रसार पश्चिमी एशिया में हुआ। ईरान तथा
पाकिस्तान के दक्षिणी तथा मध्यवर्ती बलुचिस्तान
में लोहा लगभग 1000 ई० पूर्व में मिलने लगा था।
पहले ऐसा समझा जाता था कि आर्य भाषा-भाषी
लोग इस देश में लोहे के साथ आये थे किन्तु

06

SEPTEMBER
THURSDAY

WEEK-36

249-116

SEPTEMBER 07

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
						1	2	3	4	5	6	7	8	9
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
23	24	25	26	27	28	29	30							

आन्तरिक प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि ऋग्वेदिक आर्यों को लोहे का ज्ञान नहीं था क्योंकि ऋग्वेद में प्रयोग किया गया शब्द 'अयस' केवल लोहे के लिए प्रयोग नहीं किया गया बल्कि चातु शब्द के लिए किया गया है। उत्तर वैदिक काल में गंधों में 'लोहित अयस' तथा 'कृष्ण अयस' शब्दों का प्रयोग किया गया है जिसमें कि 'कृष्ण अयस' काली चातु अर्थात् लोहे के लिए उल्लेखित है। अथर्ववेद में लोहे का फाल तथा ताबीज का उल्लेख मिलता है। 'शतपथ ब्राह्मण' में लोहे का सम्बन्ध कृषक वर्ग से जोड़ा गया है।

इस प्रकार भारत में लोहे के प्रचलन वाले अधिकांश स्थल लोहे की खानों के समीपवर्ती क्षेत्र हैं। भारत की उपरी गंगा घाटी, दोआब, पूर्वी भारत, मध्यभारत तथा दक्कन और दक्षिणी भारत में लौह उपकरण का प्रचलन मिलता है। पूर्वी भारत में चिराई, सोनपुर, महिषादल की प्राचीन स्थल से लोहित पात्र परम्परा के साथ लौह उपकरणों का प्रचलन मिलता है। उत्तरी भारत में राजस्थान के नोह और जोधपुरा नामक प्राचीन स्थल से चित्रित दूसरे पात्र एवं पूर्ववर्ती कृष्ण लोहित पात्र परम्परा के लोग भी लौह उपकरणों का प्रयोग करते थे। मध्य भारत तथा दक्कन में नागदा, हरण, उज्जैन कायथा, प्रकाश तथा बहाल आदि ऐसे प्राचीन क्षेत्र हैं जहाँ लौह युगीन संस्कृति देखने को मिलती है। हरण तथा नागदा से प्राप्त उपकरण जैसे दुधारी कटार, चम्मच, छल्ला, चाकू तथा हंसिया से पता चलता है कि ताम्रपाषाणिक संस्कृति की परिसमाप्ति

तथा आरंभिक ऐतिहासिक युगीन संस्कृति के बीच अनेक वर्षों का अन्तर रहा होगा। दक्षिण भारत के अन्तर्गत आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तामिलनाडु तथा केरल में समाधियों के खुदाई में तैंतीस प्रकार के लोहे के उपकरण जिनमें गेंती, हंसिया, बख्खला छेनी, फावड़ा, कुल्हाड़ी, चाकू, त्रिशूल, कटार, वाण फलक और तलवार मिले हैं।

इस प्रकार उपरोक्त उपकरणों में कृषि में प्रयुक्त होने वाले लौह उपकरणों की संख्या नगण्य है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अनेक स्थलों से द्यातुमल (Iron ore) मिलते हैं। जिनसे अनुमान लगाया जाता है कि वहाँ लोहे की खदाई होती थी। लौह द्यातु का प्रयोग मुख्यतः अस्त्रशास्त्रों के निर्माण के लिए ही मुख्यतः किया जाता था किन्तु छद्म शाताब्दी ईसा पूर्व के कुछ पहले उत्तर भारत में वातवरण बदलने लगा था तथा लोहे का प्रयोग अपेक्षाकृत विस्तृत पैमाने पर किया जाने लगा। यहाँ तक कि कुछ विद्वानों का ऐसा मानना है कि 'द्वितीय नगरीय क्रांति' जो गौतम बुद्ध के समय में जंगलवासी में सम्पन्न हुई थी, वह लौह तकनीक के प्रसार पर ही आधारित थी। इस विषय में यह जानकारी भी प्राप्त हुई है कि लोहे की ओर (Iron ores) के विभिन्न क्षेत्रों में (विशेष रूप से बिहार में) पहुँचने के बाद लोहे के उपकरणों का निर्माण तथा प्रयोग सम्भव हुआ।

लौह तकनीक के विकसित होने के पश्चात् कृषि कार्य में जहाँ एक ओर सुविधा अनेक ढंग से कार्य होने लगा वहीं उसके उत्पादन में वृद्धि होने लगी।